International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-1, Issue-4
August- 2014
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

रचना विधान के आधार पर "तुलसीकृत कवितावली एवं गीतावली का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन

Preeti Agnihotri
Research Scholar
Sunrise University
Alwar, Rajasthan

Dr. Anand Swaroop Shukla
Supervisor
Sunrise University
Alwar, Rajasthan

प्रस्तावना

कवितावली : यह एक मुक्तक काव्य ग्रन्थ है जिसकी रचना कवित्त शैली के माध्यम से की गयी है। घनाक्षरी सवैया एवं छप्पय इन तीनों छन्दों को कवित्त कहा जाता है। यह ग्रन्थ सात खण्डों में विभक्त है, परन्तु इसमं प्रबन्ध काव्य की दृष्टि से पदों का निर्माण नहीं हुआ है। प्रत्येक पद पर अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखता है। इसमें विषय का वैविध्य और साथ ही अनेक देवी देवताओं की स्तुतियों भी हैं। तुलसी की आत्माचरित्रात्मक उक्तिओं की दृष्टि से कवितावली का स्थान आकर्षक है। कवितावली का कलयुग वर्णन तत्कालीन परिस्थितियों का चित्ताकर्षक प्रतिबिम्ब है।

कवितावली आद्योपान्त एक सरल रचना है। रमणीयता की दृष्टि से यह ग्रन्थ तुलसी के अन्य ग्रन्थों से श्रेष्ठ है। इसका सुन्दरकान्ड काव्य चमत्कार की दृष्टि से मानस और गीतवली के सुन्दरकाण्ड से उत्तम है। यही स्थिति बाललीला के चित्रांकन की है। इस वैविध्य की दृष्टि से यह ग्रन्थ अन्यतम है। इसमें सभी रसों की काव्योंचित अभिव्यन्जना हुई है। कवितावली में वीररस का सुन्दर चित्रण होने के साथ–साथ भयानक रस का चित्रण लंका दहन के अवसर पर किया गया है। कवितावली प्रधानता ब्रजभाषा में रचित है। तथापि इसमें अवधी, राजस्थानी, बुंदेली, अरबी, फारसी के शब्द भी प्रयुक्त है। सवैया, कवित्त, घनाक्षरी व छप्पय आदि छन्दों का प्रयोग कवितावली में किया गया है। कवितावली प्रधानताः ब्रज भाषा में रचित है, तथापि इसमें अवधी, राजस्थानी, बुंदेली व अरबी फारसी के शब्द भी प्रयुक्त है। सवैया कवित्त घनाक्षरी छप्पय आदि छन्दों का प्रयोग कवितावली में किया गया है। तुलसी के वैयाक्तिक जीवन का निवारण भी कवितावली में अन्य ग्रन्थों की तुलना में अधिक मिलता है। निश्चत ही यह तुलसी का उत्कृष्ट काव्य ग्रंथ है। कवितावली के छंद क्रम को देखकर यह कहा जा सकता है कि इसमें कथा की सूक्ष्म क्षीण रेखा है। राम की दीन दयालुता और शूरवीरता ही कवितावली में अधिक वर्णित है। तुलसी का अपना जीवन भी कवितावली के उत्तरकाण्ड के छन्दों में अभिव्यक्त हुआ है। इसमें कोई संदेह नहीं कि उत्कृष्ट काव्य ग्रंथों में तुलसीदास जी यह कृति अपना अमूल्य स्थान रखती है।

गीतावली : गीतावली पदों में लिखा हुआ काव्य है कि गीतावली में राम के कार्य व्यापार की प्रमुखता नहीं है। अपितु राम के शील और सौन्दर्य की ही प्रधानता है। शक्ति का वर्णन बहुत कम है। यह भाव भावना प्रधान काव्य है। गीतावली गीत प्रधान रचना है। कथात्मक अनुबन्धन के स्थान पर भावों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति ही इसका मुख्य उद्देश्य है। इसका पूर्व रूप पदावली रामायण था इस नाम से यह आभासित होता है कि इसमें राम की कथा का धारावाहिक वर्णन है। परन्तु बाद में इसमें कुछ परिवर्तन हुआ इसे राम गीतावली कहा गया परन्तु गीतावली का वर्तमान रूप इसके पूर्व रूप से बहुत कुछ भिन्न है। इसमें तुलसी ने रामकथा के मार्मिक और मधुर स्थलों को चुनकर उनका सरस एवं चित्ताकर्षक वर्णन किया है। गीतावली में राम के जन्म से लेकर सीता निर्वासन तथा लव कुश के बाल चरित्र तक के विविध प्रसंगों का इन्द्रधनुषी चित्रण है। इस दृष्टि से गीतावली की कथा परिधि मानस से अधिक व्यापक है। सीता निर्वासन तथा लव कुश बाल चरित्र ये दो प्रसंग केवल गीतावली में ही वर्णित है। कवितावली में सीता परित्याग का केवल संकेत है। प्रसंग चयन की दृष्टि से तुलसी ने केवल मार्मिक एवं मधुर व स्थलों को ही चुना है। इसके लिये उन्हें नयें प्रसंगों की उद्भावना भी करनी पड़ी। जो गीतावली की भाव प्रवणता में सहायक सिद्ध हुए जैसे (1) निषाद पत्रिका प्रसंग जिसमें निषाद राज ने भरत को पत्र द्वारा रामपथ कथा का पूर्ण विवरण भेजा है (2) कौशल्या की विरह व्यथा, शुक्र सारिका संवाद (3) लक्ष्मण मूर्छा पर सुमित्रा का संकल्प (4) सीता बनवास (5) लवकुश चरित्र (6) उत्तरकाण्ड में कैकेयी का स्मरण आदि गीतावली की कथा सात काण्डों में विभाजित है। उत्तर काण्ड तुलसी की अनेक मौलिक उद्भावनाओं से पूर्ण है। जो अन्य कृतियों के उत्तरकाण्ड से नितान्त भिन्न है। हिंडोले दीपमलिका बसन्त विहार आदि प्रंसगों के माधुर्य का अत्यन्त ही गौरव प्रदान किया गया है। अन्य काण्डों को देखने से यह पता चल जाता है कि तुलसी की दृष्टि गीतावली में राम

के मुग्धकारी रूप पर ही अधिक जमी है। मानव में उनकी दृष्टि राम के शक्ति और शील गुणपर अधिक केन्द्रित रही है। तो गीतावली में उनके सौन्दर्य पर अतः बालक किशोर प्रौढ़ राम के सौन्दर्य चित्रण में ही उनका मन अधिक रमा है। गीतावली ब्रजभाषा में रचित काव्य ग्रंथ है जिसमें वात्सल्य श्रृंगार एवं करूण रस की मार्मिक व्यन्जना की गयी है। गीतावली में तुलसी दास जी ने राम की बाल रूप की झांकी अंकित करते हुए वात्सलय वर्णन मनोयोग से किया है। रामजन्म पर सर्वत्र छाया उल्लास एवं आनन्द का वर्णन तुलसी ने गीतावली में बड़े मनोयोग से किया है। ब्रजभाषा का सरस मधुर और ललित प्रयोग गीतावली में मिलता है। गीतावली के समस्त पद धनाक्षरी पद है। जिसमें गेयता संगीतत्मका है। ये पद विभिन्न राम रागनियों से गेय पद हैं।

रचना विधान के आधार पर

कवितावली– कवितावली के काण्ड और उनके छन्दों की संख्या

1.	बालकाण्ड	छन्द संख्या	22
2.	अयोध्याकाण्ड	छन्द संख्या	28
3.	अरण्यकाण्ड	छन्द संख्या	01
4.	किष्किंधाकाण्ड	छन्द संख्या	01
5.	सुन्दरकाण्ड	छन्द संख्या	32
6.	लंकाकाण्ड	छन्द संख्या	183
7.	उत्तरकाण्ड	विविध छन्द	58
		कुल संख्या	**325**

छन्दों के प्रकार–

1. घनाक्षरी
2. सवैया
3. छप्पय

मुख्यतः कवितावली में तीन प्रकार के छन्द हैं।

1. घनाक्षरी, 2. सवैया, 3. छप्पय (गेला + उल्लालो)

कविता–धनराशि + सवैया + छप्पय

उपयुक्त तीनों प्रकार के छन्दों (कवित्तों) के संग्रह के कारण यह ग्रन्थ कवितावली के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

कवितावली के काण्ड और छन्द लक्षण

मनहरण कवित्त

दुर्मिल सवैया–

यह वर्णिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में आठ सगण (815) होते हैं।

अवधेश के बालक चारि सदा, तुलसी मन मन्दिर में बिहरैं।

मनहरण कवित्त

इसमें चार चरण होते हैं प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते हैं। 16 और 15 वर्णों की यति होती **हैं। चरणानत में गुरु रहता है।**

छोनी में के छोनी पति छाजै जिन्हें छत्र छाया,
छोनी छोनी छाये छिति आये निमिराज को"
(कवि बालकाण्ड छन्द 8)

तुलसी द्वारा प्रयुक्त मनहरण तथा सवैया छन्दों में एक विशेषता यह भी है। कि छन्द गब्जा के निर्वाह के साथ साथ तुलसी ने गति की रक्षा तो की ही है। साथ ही मध्यवर्ती अनुप्रासों तथा तुर्कों का पुट देकर कविता के साथ भाव को अधिक रसमय बना दिया है। उपयुक्त छन्द में 6 के अनुप्रास के साथ साथ छाये और आये की मध्यवर्ती तुर्कों ने छन्द को प्राणवन्त बना दिया। निम्नांकित चरण में अन्तर्वती तुक की छटा दृष्टव्य है।

"प्रीति सम नामसों प्रतीति राम नामकी
प्रसाद रामनाथ के पसारि पायं रति हां।।"

छप्पय छन्द :–

इसमें छन्द चरण होते हैं। जिनमें पहले चार चरण रोला के और बाद के दो चरण उल्लाला के रहते है। रोला के प्रत्येक चरण में 24 मात्रायें होती है यदि 11 वीं मात्रा पर उल्लाला के प्रत्येक चरण में 26 मात्रायें होती है। 13.13 पर रात्रि (विश्राम)

रोला छन्द :–

डिगति उर्वि अति गुर्वि सर्ब पब्बै समुद्र सर"

(कवितावली बालकाण्ड छन्द 11)

उल्लाला छन्द :–"ब्रहम्मांड खंडकियों चंड धुनि जबहि राम सिव धनु दल्यौ"

उपजाति छन्दः–(मत्तगयन्द सवैया + सुन्दरी सवैया) इसके चार चरणों में पहले दो चरण मत्यगयन्द सैवया के और शेष दो चरण सुन्दरी सवैया के होते है। दूसरा चरण मत्गयन्द का फिर तीसरा सुन्दरी का और चौथा चरण मत्तययन्द का।

मत्तगयन्द सवैया :– इसके प्रत्येक चरण में 7 भाग और 2 गुरू होते हैं। जैसे'"गर्भ के अर्भक काटन को पटुधार कुठार कराल है जाकौ"

सुन्दरी सवैयाः– इसके प्रत्येक चरण में 8 सगण और एक लघु होता है। जैसेः–

लघु आनन उत्तर देत बड़ों लारि है करि है। कछु साको

उपजाति सवैया :– इस सवैया सुन्दर व मत्तगयन्द के चरण होते हैं। पहला चरण सुन्दरी का दूसरा चरण मत्तगयन्द का फिर तीसरा चरण सुन्दरी चौथा चरण मत्तगयन्द का।

जल को गये लखन है, परिरवौ पिव छाह धरिकै हवै ठाढ़े। (सुन्दरी)
पौछि पसेउ बयारि करौं अरू पायें पखरिही भूमुरि डाढ़े। (मत्तगयन्द)

कवितावली के सातों काण्डों में सुन्दर काण्ड और लंका काण्ड के प्रसंग प्राय उत्साह और क्रोध भय आदि उग्र स्थाई भावों से ही सम्बद्ध है इसलिये तुलसी ने इन काण्डों में अधिकतर कवित्त छन्द का ही प्रयोग किया है। बालकाण्ड और अयोध्या काण्ड के प्रसंगों का सम्बन्ध वात्सल्य श्रृंगार और करूण रस से है इस लिये इन काण्डों में प्रायः सवैया छन्दों का ही प्रयोग किया गया है। कवितावली में शब्दान्तगति वर्ण की ध्वनि जिस प्रकार रस वृद्धि में सहायक होती है उसी प्रकार छन्द की गति भी सहायक होती है। दिन कर शब्द की ध्वनियां कोमल भाव के लिए जिस तरह उपयुक्त है। उसी तरह सवैया छन्द भी कोमल भाव के लिए उपयुक्त हैं मतिण्ड शब्द की ध्वनियां जिस तरह उग्र भाव के लिए उपयुक्त है। उसी तरह कवित्त और छप्पय छन्द भी उग्रभाव की संवृद्धि के लिए उपयोगी है।

भाषा प्रयोगों के आधार पर

कवितावली	–	साहित्यक ब्रजभाषा
गीतावली	–	साहित्यक ब्रजभाषा
श्रीकृष्णगीतावली	–	साहित्यक ब्रजभाषा
विनय पत्रिका	–	साहित्यक ब्रज भाषा
दोहावली	–	साहित्यक ब्रजभाषा

तुलसी ब्रजभाषा को एक व्यापक रूप देना चाहते थे उनकी भाषा को राष्ट्रीय ब्रजभाषा कहा जा सकता है। ब्रजभाषा ध्वनि प्रवृत्ति में ओकारान्त और पश्चिमी ब्रजभाषा औकारान्त है।

तुलसीदास जी का कोई ऐसा ग्रंथ नहीं है जिसमें शुद्ध रूप से अवधी हो या शुद्ध रूप से ब्रजभाषा हो या किसी एक भाषा व्याकरण का पूरी तरह से पालन किया हो। अवधी ग्रंथों में कुछ ब्रजभाषा के व्याकरण का प्रयोग और ब्रज के ग्रंथों में कुछ अवधी के व्याकरण का प्रयोग मिल जाता है। तुलसी की कविता में प्रधान अंगी भाषा पूर्वी ब्रजभाषा है। परन्तु अवधी एवं खड़ीबोली के पुट मिलते हैं।

गीतावली की भाषा : गीतावली के शब्दों तथा पदों में ध्वनि क्रम विचार करने पर विदित होता है कि उनमें विकृति की प्रवृत्ति नहीं मिलती है।

उदाहरण–

पियारेा–(गीतावली पृ० स० 68/12)

उजियारे–(गीतावली पृ० स० 68/1)
हिय (गीतावली पृ० स० 65/4)
सुवन–(गीतावली पृ० स० 65/3)
रूपकात्मक स्थित–तिर्यक –बहुबचनीय पुल्लिंग संज्ञा के रूप नि प्रत्यय के साथ मिलते हैं।
अंगनि– (गीतावली बालकाण्ड पृ० स० 55/2)
ढोटनि–(गीतावली बालकाण्ड पृ० स० 50/1)
लोचननि–(गीतावली बालकाण्ड पृ० स० 41/4)
मंदरनि–(गीतावली बालकाण्ड पृ०स० 63/1)
ईकाशन्त स्त्रीलिंग शब्दों का त्रियक बहुवचन न प्रत्यय के साथ मिलता हैः–

निष्कर्षः

कविवर, तुलसी ने अपनी ब्रज काव्य कृतियों में सामाजिक विषमता, आर्थिक असमानता, सांस्कृतिक अनेकरूपता औश्र जातिगत विविधता का निरूपण किया है। शिक्षा, साहित्य संस्कृति शिल्प, राजनीति, धर्म, दर्शन और शिल्प आदि सभी समाज के स्वतन्त्र आयाम हैं। इन सभी के संयोजन की प्रक्रिया सामाजिक संरचना को संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति की है। तुलसी की भाषा समाज को समन्वित करती है, साथ ही साथ प्रगतिशील समाज की प्रक्रिया का मार्ग भी प्रशस्त करती है। एक भाषा एक संस्कृति को बोधक होते हुए भी बहुसंस्कृतिमूलक समाज की अभिव्यक्ति का सहज माध्यम बन जाती है। तुलसी ने ऐसी ही भाषा का संरचना स्तर पर प्रयोग किया है। यह समन्वयवादी संरचना सम्पर्क भाषा हिन्दी की है। विभिन्न भाषाओं और बोलियों के रचनातत्वों की अभिव्यक्ति का प्रबल और सशक्त माध्यम बन गयी है। तुलसीदास ने बहुस्तरीय और बहुआयामी भाषा संरचना के माध्यम, विश्व–बन्धुत्व के रचना सूत्रों को ही इंगित नहीं किया है अपितु प्रस्तुत किए हैं। हिन्दी साहित्य के जिन मूर्द्धन्य साहित्यकारों ने तुलसी के भाषायी आदर्श का अनुकरण कर काव्य प्रणयन किया है उन्हें साहित्य के क्षेत्र में आशातीत लोकप्रियता प्राप्त हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. हिन्दी का सामाजिक संदर्भ सं० डॉ० रवीन्द्रनाथ श्री वास्तवडॉ०रमानाथ सहाय केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, प्रथम संस्करण, 1976
2. हिन्दी भाषा का समाजशास्त्र डॉ0 रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 1984
3. हिन्दी भाषा संदर्भ और संरचना डॉ० सूरजभान सिंह साहित्य सहकार कृष्णनगर, दिल्ली–51, प्रथम संस्करण
4. सामाजिक भाषाविज्ञान योगेन्द्र व्यास गुजरात वि०वि० अहमदाबाद, प्रथम संस्करण, 1987
5. भाषा और संस्कृति सं०डॉ०भोलानाथ तिवारी प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 1984
6. भाषा अनुरक्षण एवं भाषा विस्थापन सं० डॉ० श्री कृष्ण केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1986
7. भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी डॉ० रामविलास शर्मा राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1979